सकी। की दृशी अश्वा अश्ववकी व्यापिनी वा, शिश्चमती निमितबुद्धिः। येथं मरखती मापि धेनुः प्रीणयित्री मती भिषक् चिकित्सक मदृशी। योऽयमश्विरूपा मरखती रूप सिषक् मे। योऽयमश्विरूपा मरखती रूप सिषक् मे। अवजम् श्रीषधमदृशम् इदं कर्म दुहे दे। ग्धी निष्पादयती त्यर्थः॥

त्रथ षष्ठमन्त्रमाइ। "होता यचहुरी दिगः। कवयो न यचखतीः। त्रित्रियां न दुरीदिगः। इन्हों न रीदमी दुवे। दुहे कामान्त्रस्वती [४]। त्रित्रिन्हाय भेषजम्। ग्रुकत्र च्योतिरिन्हियम्। पयः सेमः परिखुता घृतं मधु। विय-न्वाच्यख होतर्यज" इति। दुरणव्दाभिधेयाः दाराभिमा-निन्यः षष्ठप्रयाजदेवताः, ता होता यजतु। ताः कीदृष्यः, दिशो दिगात्मिकाः कवय्यो न कवाटयुक्ता दव वर्त्तन्ते। व्यच-खतीः व्याप्तिमत्यः। कीदृष्यो दिगात्मिकाः दुराया देवताः, त्रित्रियम् न त्रित्रदेवाभ्यां सह वर्त्तन्ते। दन्हो न दन्दस्तु रोदसी द्यावाष्ट्रयियौ दुघे दोग्धी तन्त्रयं सारं सन्पादयती-त्र्ययः। सरखती कामं दुहे दोग्धी सन्पादयती। त्रित्रवन्द्रयं त्रित्रयां सहिताय दन्द्राय भेषजम् त्रीषधसदृण्यिदं कर्षा ग्रुद्धं न ग्रुकं न ग्रुद्धमिव च्योतिः प्रकाणक दन्द्रयं सन्पाद्यत दित ग्रेवः॥

श्रय मप्तममन्त्रमा ह। 'होता यचत् सुपेशमोषे नकं दिवा। श्रश्यना मञ्जानाने। समञ्जाते सरखत्या। त्विधिमिन्द्रेन भेषजम्। ग्रथेने। न रजमा हृदा। पयः सोमः परिस्ता